मेरा लक्ष्य और उसकी समीक्षा

बजरंग मुनि

पच्चीस दिसम्बर दो हजार आठ मेरी जीवन यात्रा का दूसरा महत्व पूर्ण मोड सिद्ध हुआ। इसके पहले एक मोड पच्चीस दिसम्बर सन चौरासी को आया था जिसने चौरासी के पूर्व की कार्य प्रणाली को पूरी तरह बदल कर रख दिया था।

बचपन से ही मेरी रूचि समाज व्यवस्था मे रही । मै कभी भी न धर्म से जुड सका न संगठन से । ये दोनो यदि एक सीमा मे रहकर समाज व्यवस्था मे सहायक हो तो हमारे आदर्ष है अन्यथा त्याज्य। यही कारण रहा कि आर्य समाज से जुडने के बाद भी मै उसके सामाजिक पक्ष तक ही सीमित रहा,संगठन पक्ष या कर्मकांड के मामले मे मै बहुत आगे तक नही गया। बचपन मे मुझे ऐसा महसूस हुआ कि राजनैतिक षक्ति समाज व्यवस्था मे सहायक है। ऐसा मानकर मैने राजनैतिक षक्ति इकट्ठी करने मे जोर लगाया। नगरपालिका का बचपन मे ही अध्यक्ष बना। सामाजिक षक्ति बढने मे सहायता नही मिली। तब राजनैतिक षक्ति और बढाई गई। नगर से जिले तक और जिले से प्रदेष तक षक्ति बढी किन्तु सामाजिक व्यवस्था मे इस षक्ति ने बाधा ही पैदा की, सहायक तो कभी नही बनी । मैने गंभीरता पूर्वक विचार किया कि राजनैतिक षक्ति बढने का व्यक्ति की व्यक्तिगत या पारिवारिक उन्नति पर तो गंभीर प्रभाव हो सकता है किन्तु सामाजिक लक्ष्य प्राप्ति की दिषा मे यह मार्ग साधक न होकर बाधक ही है । पच्चीस दिसम्बर चौरासी को मैने एक विचार मंथन षिविर का आयोजन करके अपनी मन स्थिति बताई और राजनैतिक मित्रो से विदाई ले ली। किन्तु मेरे मन मे यह धारणा थी कि समाज व्यवस्था के ठीक ठीक संचालन मे राज्य की भी अनिवार्य भूमिका है और राज्य राजनैतिक व्यवस्था से ही संचालित होता है । कही न कही राज्य और उसकी राजनैतिक व्यवस्था के बीच गंभीर दोश है जो समझ कर ही आग्रे बढना उचित होगा अन्यथा हम लक्ष्य की और कभी नही बढ सकते जैसे सन चौरासी तक बिता चुके है।

मैने पचीस दिसम्बर चौरासी को अपने मित्रो के बीच धोशित किया कि मेरा लक्ष्य है समाज सषक्तिकरण। मै दो हजार पांच तक उन कारणो को खोजूँगा जो समाज सषक्तिकरण मे बाधक है , सात तक उन कारणो को दूर करूँगा तथा नौ तक इस कार्य को पूरा करके लक्ष्य प्राप्त धोशित कर दूगा। इस आधार पर मैने रामानुजगंज के किनारे के सुनसान जंगल मे पहाडी के नीचे एक कुटिया बनाई और सामाजिक समस्या अनुसंधान का कार्य तीव्र गति से षुरू किया। अनुसंधान का तरीका या इतिहास इस लेखन का उदेष्य न होने से उसे छोड रहा हूँ। उसमे आई गंभीर बाधाएँ भी चर्चा का विशय नही । मुख्य विशय है निश्कर्श । कुछ ही वर्शो मे मुझे महसूस होने लगा कि दोश समाज का न होकर राजनीति का है । समाज की भूमिका राजनीति के संचालन मे बिल्कुल न होकर ठीक विपरीत हो गई है और राजनीति ही समाज का संचालन करने लगी है । समाज के दोश राजनीति मे नही आ रहे बल्कि राजनीति के दोश समाज मे जा रहे है । यह भी अनुभव किया गया कि व्यक्तिगत या पारिवारिक उन्नति को लक्ष्य बनाने वालो का आकर्शण लगातार राजनीति की दिषा मे बढ रहा है । ऐसे लोग वहा जाकर सफल भी हो रहे है । ऐसे लोगो को समाज नही चुनता । वे तो किसी राजनैतिक व्यवस्था के अन्तर्गत चुने जा रहे है जिस पर समाज ठप्पा लगाने के अतिरिक्त कुछ अलग नही कर सकता।

हमने भारत की वर्तमान राज्य व्यवस्था के संबंध मे निम्नांकित सषोधनो के निश्कर्श निकाले

1. नई व्यवस्था मे लोकतंत्र की परिभाशा लोक नियुक्त तंत्र से बदलकर लोक नियंत्रित तंत्र होगी। इस कार्य के लिये लोक स्वराज्य प्रणाली अपनाई जायगी जिसमे परिवार की मुख्य संवैधानिक भूमिका होगी। उसके बाद गांव जिला प्रदेष और अन्त मे राज्य की होगी। राज्य के सेना ,पुलिस,वित्त, विदेष और न्याय विभाग अपने होगे। अन्य विभाग नीचे की इकाइयां राज्य को दे भी सकती है और वापस भी ले सकती है।
2. राज्य का पहला दायित्व सुरक्षा और न्याय होगा। वित्त विदेष उसके सहायक होगे। राज्य सुरक्षा और न्याय की गारंटी देगा। असफल होने पर राज्य पर्याप्त मुआवजा भी देगा और उसकी असफलता भी मानी जायगी। सुरक्षा और न्याय की गारंटी के लिये विषेश स्थिति मे गुप्तचर न्यायिक व्यवस्था का भी उपयोग राज्य कर सकता है।
3. राज्य का कर्तव्य होगा कि वह गरीब ग्रामीण श्रमजीवी को अमीर षहरी वुद्धिजीवी की तुलना मे विषेश आर्थिक संरक्षण दे । इसके लिये कृत्रिम उर्जा की भारी मूल्य वृद्धि करके उक्त प्राप्त धन राषि सबके बीच बराबर बराबर या यदि भ्रश्टाचार अनियंत्रित न हो तो गरीब ग्रमीण श्रमजीवी के बीच बांट दे।

KAGIINDIA

4. राज्य किसी भी परिस्थिति मे धर्म, जाति, भाशा, उम्र, लिंग, तथा उत्पादक उपभोक्ता को पृथक वर्ग मानकर कोई कानून न बनावे। क्षेत्रीयता तथा आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध मे भी पृथक कानून विषेश आवष्यक हो तभी बनावे।

इन चारो आधार भूत परिवर्तनो के अतिरिक्त कुछ व्यावहारिक संषोधन भी करने के निश्कर्श निकाले गयेः—

1. समानता की ऐसी परिभाशा बने कि एक सीमा से अधिक सुविधा प्राप्त लोगो या परिवारो को समान स्वतंत्रता तथा सीमा रेखा से कम वालो को समान अतिरिक्त सुविधा दे । यदि समानता की यह परिभाशा मानने मे संविधान का प्रीएम्बुल बाधक हो तो उस प्रीएम्बूल से समता षब्द हटाकर स्वतंत्रता षब्द षामिल कर दें।
2. परिवार को व्यवस्था की पहली महत्वपूर्ण संवैधानिक इकाई बनाया जाय परिवार की वर्तमान परिभाशा मे संषोधन करके

क. उस पर अपने सदस्यों के आपराधिक कार्यो का भी आंषिक दायित्व डाला जाय।

ख. परिवार मे खून सम्बन्धो की अनिवार्यता को समाप्त करके कम्यून प्रणाली को भी षामिल होने की छूट दें।

ग. परिवार की सम्पूर्ण सम्पत्ति मे परिवार के प्रत्येक सदस्य का बराबर का हिस्सा हो जिससे महिलाओ को भी समान अधिकार मिल सके।

ध. पष्चिमी देषो की व्यक्तिगत सम्पत्ति, साम्यवाद की राश्टीय सम्पत्ति, गांधी जी के टस्टी षिप आदि को मिलाकर संषोधित चौथे आर्थिक सिद्धात के रूप मे परिवार की संयुक्त सम्पत्ति परिवार मे रहते तक का नया आर्थिक ढाचा बने जिससे परिवार सम्पूर्ण व्यवस्था का एक मजबूत आधार बन सके।

3. प्रत्येक परिवार को नौ अंको की एक निष्चित पहचान संख्या दे दी जाय। इस संख्या के अन्तर्गत ही प्रत्येक व्यक्ति की भी पृथक संख्या दे दी जाय। इसके लिये पूरे देष को निन्यान्नवे प्रदेष, प्रदेष को निन्यान्नवे जिले तथा जिले को निन्यान्नवे गांवो मे बाट दिया जाय।
4. प्रत्येक परिवार ग्रम सभा मे पंजीकृत हो जिसमे उसकी सदस्य संख्या तथा सम्पति का विवरण अंकित हो।
5. केन्द्र सरकार अपने पांच विभागो के लिये सिर्फ एक करलगा सकती है जो परिवार की सम्पूर्ण सम्पति पर वार्शिक दो प्रतिषत से अधिक न हो। परिवार ,गांव, जिला प्रदेष या केन्द्र द्वारा अन्य विभागो के लिये पृथक से धन इकठ्ठा किया जा सकता है जो केन्द्र सरकार से पूरी तरह अलग व्यवस्था होगी।
6. परिवार व्यवस्था मे प्रधान मंत्री के समान अधिकार प्राप्त एक मुखिया तथा राश्टपति के समान सम्मान प्राप्त परिवार प्रमुख होगा। परिवार का मुखिया सबकी राय से तथा प्रमुख सबसे अधिक उम्र का व्यक्ति होगा चाहे वह महिला हो या पुरूश।
7. देष की विकास दर का आकलन समाज के न्यूनतम श्रम मूल्य वृद्धि के आधार पर आकलित होगा। नकि किसी अन्य आधार पर।
8. लोक सभा स्थायी होगी जिसमे प्रति वर्श की एक निष्चित तारीख को उसके पाचवे भाग का चुनाव होगा। सरकार लोकसभा के बहुमत से चुनी जायगी। यह बहुमत प्रत्येक पांच वर्श मे दुहराया जायगा। दल बनाने की सबको आन्तरिक छूट होगी किन्तु संवैधानिक या कानूनी मान्यता नही होगी।
9. किसी भी निर्वाचित जन प्रतिनिधि को वापस करने की प्रकिया बनाने का अधिकार निर्वाचन मंडल को होगा।
10. किसी भी व्यक्ति को संसद के भीतर अपनी नियमानुसार बात कहने से बल पूर्वक रोका जाता है तो न्यायालय को हस्तक्षेप का अधिकार होगा।
11. न्यायालय द्वारा मुत्युदंड धोशित अपराधी यदि आखे देकर तथा अंध अवस्था मे जीना चाहे तो न्यायालय उसे कुछ षर्तो के साथ जमानत पर छोड सकती है
12. सुरक्षा कर्मियो को छोडकर धातक अस्त्र षस्त्र रखने पर पूर्ण प्रतिबंध होगा।
13. संविधान संषोधन के लिये वर्तमान प्रकिया के साथ साथ एक पृथक संविधान सभा की भी सहमति आवष्यक होगी। यदि मूल अधिकारो मे कोई संषोधन करना हो तो उसके बाद भी जनमत संग्रह आवष्यक होगा।
14. मूल अधिकारो मे से सब बाते निकालकर सिर्फ चार तक सीमित किये जायंगे

क. जीने का ख. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ग. स्व निर्णय ध. सम्पति। अन्य सभी अधिकार संवैधानिक या कानूनी अधिकार होगें मूल अधिकार नही ।इन चार का उल्लंधन ही अपराध होगा। षेश का उल्लंधन गैर कानूनी या अनैतिक हो सकता है परन्तु अपराध नही।

KASHMIDA

15. भश्टाचार व्यवस्था की एक गंभीर बीमारी है और इसके समाधान के बिना कोई सफलता संभव नही है । कानूनो को कम से कम करना इसका एकमात्र समाधान है। इसके लिये सरकारी करण को बिल्कुल पलटकर या तो निजीकरण करना होगा या समाजीकरण जैसी कोई नई व्यवस्था खडी करनी होगी।

कुछ और भी मुदो पर निर्णय हुए जिनका विस्तार अन्य पुस्तको मे मिल सकता है। वैसे भारत का प्रस्तावित संविधान भी बना जो वैकल्पिक संषोधनो युक्त पूरा का पूरा है। ऐसे संषोधनो की आवष्यकता तथा लाभ हानि का आकलन भी अलग से विस्तार पूर्वक किया गया । अक्टूबर पचान्नवे तक के ग्यारह वर्शो मे हम अन्तिम निश्कर्श तक पहुॅच चुके थे कि एकाएक मध्य प्रदेष सरकार ने हमारे अनुसंधान को नक्सलवादी योजना धोशित करके कुचलना षुरू किया। नक्सलवादी वामपंथी तथा सर्वोदय के बंग जी अमरनाथभाई की टीम ने हमारा साथ दिया। यहॉ यह बता देना आवष्यक है कि अनुसंधान के क्रम मे ही मेरे सम्पर्क मे सर्वोदय के दो प्रमुख लोग आये ठाकुर दास जी बंग तथा रामचनद्र जी राही। मैने बंग जी को महत्व दिया क्योकि उनमे मुझे गांधी दिखाई दिये और राही जी को व्यक्तिगत पारिवारिक पृश्ठभूमि की चर्चाओ ने मुझे सतर्क किया। हम चार वर्शो मे पूरी सरकारी लडाई जीत गये। रामानुजगंज से बाहर के कांग्रेसी, संध परिवार से जुडे लोग, सर्वोदय के राही जी के गुट के लोगो ने हमारे विरूद्ध सरकार का साथ दिया और रामानुजगंज के कांग्रेसी , संध परिवार , सरकारी कर्मचारी, पत्रकार अन्य नागरिक तथा बंग जी सिद्धराज जी अमरनाथ भाई आदि सर्वोदय के लोगो ने हमारा साथ दिया। हम पूरी तरह अहिंसक संवैधानिक तरीके से लडाई जीत गये किन्तु हमारा चार वर्श का समय इस संधर्श की भेट चढ गया।

चार नवंबर निन्यान्नवे को हमने अनुसंधान पूरा मानकर रामानुजगंज की सीमाओ के अन्तर्गत ही नये आधार पर प्रयोग किये। इस प्रयोग मे भी बंग साहब, सिद्धराज जी, अमरनाथ भाई की टीम ने भरपूर मार्ग दर्षन दिया और राही जी विरोध मे प्रचार करते रहे। संध परिवार तथा कांग्रेस के लोग विरोध छोडकर या तो समर्थन करने लगे थे या तटस्थ हो गये वामपंथी मित्र असंतुश्ट होने लगे क्योकि

क. हम पूरी तरह हिंसा के विरूद्ध थे

ख. हम स्थानीय व्यवस्था मे बाहरी हस्तक्षेप के विरूद्ध थे अर्थात हम षासकीय हस्तक्षेप के साथ साथ बाहरी संगठनो का भी दखल नही चाहते थे

ग. हम गरीब ग्रमीण श्रमजीवी की समस्याओ का समाधान करना चाहते थे किन्तु वर्ग संधर्श के विरूद्ध थे जबकि वामपंथ ऐसे किसी समाधान के विरूद्ध वर्ग संधर्श का पक्षधर था।

ध हम कृत्रिम उर्जा की मुल्य वृद्धि को गरीब ग्रमीण श्रमजीवी के हित मे मानते थे जबकि वामपंथी इसे वर्ग संधर्श के लिये धातक।

पांच वर्शो की लोक स्वराज्य की नगर व्यवस्था पूरी तरह सफल रही। हम लोगो के पास अब चार वर्शो का समय था और हम लोगो ने सीधा दिल्ली मे कार्य षुरू कर दिया। दिल्ली मे हमारी मुख्य प्राथमिकता लोक स्वराज्य ही रही। हम परिवार गांव जिले को संवैधानिक अधिकार और राइट टू रिकाल को आधार बनाकर अपनी बात समझाते थे। जब भी और जहॉ भी मै इस विशय पर बोलता था, लोग मंत्र मुग्ध होकर सुनते भी थे और समर्थन भी करते थे। सब सुधरेगा तीन सुधारे नेता कर कानून हमारे का नारा खूब प्रचलित हुआ। ग्रामीण गरीब श्रमजीवी के हित मे कृत्रिम उर्जा की भारी मुल्य वृद्धि के प्रस्ताव मे प्रारंभिक विरोध खूब होता था और अन्त मे पूरी सहमति बन जाती थी। संविधान संषोधन की आवष्यकता पर तो तत्काल सहकति बन ही जाती थी। दिल्ली तथा देष के अन्य भागो मे भी इन विशयेा पर अच्छा जन समर्थन मिलता रहा।

मुझे जन स्वीकृति तो बहुत मिलती रही किन्तु कोई टीम नही बन पाई। जो लोग कुछ करने की क्षमता रखते थे वे सब कुछ समझते हुए भी इस दिषा मे कुछ करने के लिये तैयार नही थे। जो लोग कुछ करने के लिये तैयार थे उनमें पीछे चलने की तो इच्छा भी और क्षमता भी थी किन्तु आगे चलने की क्षमता नही थी। मै स्वय नेतृत्व करना नही चाहता था क्योकि मेरे अन्दर संगठक के व्यावहारिक गुणो का अभाव है। गोविन्दाचार्य जीपूरी बात को समझे तो बहुत किन्तु राजनैतिक महत्वाकांक्षा से कभी पूरी तरह मुक्त नही हो पाये । बंग जी की षारीरिक क्षमता भी नही थी और दिल्ली से दूरी भी थी । षीध्र ही मुझे वास्तविक स्थिति का आभास होने लगा। मुझे यह तय करना था कि या तो मै नेतृत्व करू या अपने लक्ष्य को भगवान भरोसे छोड दूॅ। दो हजार छ मे ही मैने वानप्रस्थ की धोशणा करके नेतृत्व से स्वय को अलग कर लिया। फिर भी मैने कोई टीम खडी होने के प्रयत्न जारी रखे।

प्रष्न उठता है कि मेरे आकलन मे भूल हुई या प्रयत्नो मे या यह कार्य ही संभव नही था। मेरा अब भी मानना है कि न मेरे प्रयत्नो मे कमी हुई न कार्य असभंव है गलती हुई है सिर्फ आकलन मे । जो भी लोग बढ

KASH INDIA

चढ कर राजनीति धर्म या समाज को नेतृत्व दे रहे है लगभग उन सबका ही पहला उदेष्य व्यक्तिगत परिवारिक लाभ हानि तक सीमित है । सामाजिक हित उसमे या तो है ही नही या है तो बहुत पीछे नाम मात्र का । मै दिल्ली के पूर्व इतना गिरा हुआ प्रतिषत नही समझता था। मुझे विष्वास था कि कई सक्षम लोग अवष्य मिलेगे जो व्यक्तिगत पारिवारिक हितो से उपर उठकर काम करने के लिये तैयार हो जायेगे। ऐसे लोग बडी संख्या मे मेरा साथ देने वाले तो मिले जो अब भी इस मामले मे साथ है किन्तु नेतृत्व देने लायक क्षमता का अभाव ही रहा।

यदि हम सफलता असफलता का आकलन करें तो दो हजार नौ तक जिस लक्ष्य को पाने की धोशणा की गई थी वह पूरा होना संभव नही। एक वर्श मे कोई चमत्कार हो जायगा यह कहना भाग्य वादियो का काम हो सकता है मेरे लिये यह उचित नही। दूसरी ओर हम सफलता का आकलन करे तो अपने लक्ष्य की दिषा मे आगे बढने मे बहुत अधिक सफल रहे है। भारत सरकार भी कुछ विशयो पर ऐसे ही नतीजो तक पहुच रही है। सरकार एक बहुउदेष्यीय नागरिक पहचान पत्र बनाने की दिषा मे गंभीर है । सरकार पंचायतो को आंषिक अधिकार दे रही है। यह अलग बात है कि यह पंचायती राज धोखा देने के लिये है, वास्तविक नही, क्योंकि पंचायतो को कार्यपालिक अधिकार ही दिये जा रहे हे विधायी नही तथा पंचायतो को संवैधानिक स्वरूप न देकर कानूनी स्वरूप दिया जा रहा है। फिर भी इस दिषा को सरकार समझ तो रही है । सरकार ने ग्रमीण गरीब श्रमजीवी वर्ग के लिये रोजगार की आदर्ष पहल की है और इसमे परिवार को पहली बार इकाई माना है जबकि पूर्व मे कही भी परिवार व्यवस्था को तोडने के ही प्रयत्न होते रहे जोडने के तो हुए ही नही। अब कुछ राजनैतिक दल परिवार को एक मुष्त जीवन भत्ता देने की भी धोशणाए कर रहे है जो एक ठीक दिषा है। सरकार भी इस दिषा मे कुछ करने जा रही है। राइट टू रिकाल की आवाज फिर से जोर पकड रही है, इस्लामिक वामपंथी आतंकवाद को कुचलने मे अवैधानिक तरीको तक का समर्थन बढ रहा है। सबसे महत्वपूर्ण प्रगति यह दिखने लगी है कि भारत की अव्यवस्था के लिये संविधान के गुण दोशो पर खुली बहस षुरू हो चुकी है अन्यथा पहले तो संविधान को दोशी मानने वाले खोजने पर भी नही मिलते थे। रामानुजगंज षहर के लोगो द्वारा नगर प्रमुख का चुनाव करके समाज व्यवस्था की पहली इट रखना भी एक कान्तिकारी धटना ही है। इस सारी प्रगति के बाद भी जब तक लोक स्वराज्य की दिषा मे कोई सफलता नही मिलती तब तक सारे प्रयत्न पेड के पत्तो के ही समान है। सम्पुर्ण व्यवस्था की जड तो है लोक स्वराज्य और उस दिषा मे हमारी प्रगति धीमी है। क्योकि यदि लोक स्वराज्य की दिषा मे कोई तात्कालिक परिणाम मूलक आंदोलन संभव है तो उसमे सर्वोदय की महतवपूर्ण भूमिका चाहिये ही । अभी इस संबंध मे बंग जी की टीम के अन्तिम प्रयत्न भी असफल हुए और संधर्श विरोधियो ने अन्तिम रूप से लोक स्वराज्य अभियान से दूर रहने का प्रस्ताव पारित कर दिया। इससे यह स्पश्ट दिखता है कि लोक स्वराज्य के लिये लम्बा संधर्श करना पडेगा।

लोक स्वराज्य की दिषा मे मेरे प्रयत्न कितने सफल हुए कितने असफल यह आकलन आप सबका विशय है। मै तो यही समझता हूँ कि भले ही मै गोल करने मे सफल नही रहा किन्तु मैने मैदान छोडते समय गेंद विपक्षी खेमे मे दूर तक ले जाकर छोडी है। यह बात स्पश्ट रूप से प्रमाणित कर दी गई है कि सारी समस्याओं के समाधान की षुरूआत लोक स्वराज्य से ही होगी अर्थात या तो हमें लोकतंत्र को लोक स्वराज्य मे बदलना होगा या यदि लोक तंत्र ही रखना है तो उसका अर्थ लोक नियुक्त तंत्र से बदलकर लोक नियंत्रित तंत्र करना होगा। यह एकमात्र समाधान है। इससे हटकर किये जाने वाले सभी समाधान उसी तरह है जैसे नाव की रस्सी खुले बिना ही चप्पु चलाने के प्रयत्न। ऐसे प्रयत्न चाहे चुनाव सुधार से संबंधित हो या भश्टाचार उन्मूलन षत प्रतिषत मतदान आंदोलन से । आपराधिक छवि नियत्रण, स्वदेषी जागरण, वोटर पेंषन, किसान जागरण, आदि के सारे प्रयत्न निरर्थक होगे क्योकि जेल मे बंद कैदी जेल से बाहर आने का प्रयत्न न करके चाहे जितना व्यायाम करे या पूजा पाठ करे सब तब तक निरर्थक होगा जब तक जेल मुक्ति मे सहायक न हो। जब तक समाज सषक्तिकरण अभियान सफल नही होगा तब तक कुछ और षुरू करने का कोई औचित्य नही किन्तु दुर्भाग्य है कि आज कई अच्छे लोग भी राज्य कमजोरी करण अभियान से दूर नये नये अभियान छेडकर समाज को गुमराह करते रहते है।

इन परिस्थितियों का आकलन करके ही मैने निश्कर्श निकाला कि अब दो हजार नौ की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है और एक वर्श पूर्व ही गेंद समाज को सौंपकर मैदान के बाहर होकर मदद की जावे। इसलिये मैने पच्चीस दिसम्बर आठ को ही समाजार्पण का निर्णय लिया। यह मेरे जीवन का दूसरा महत्वपूर्ण मोड है। इसके पूर्व चौरासी मे मैने दलगत राजनीति छोडकर राजनीति और समाज विशय पर षोघ और समाधान के प्रयत्न षुरू किये थे। षोघ और प्रयोग के स्तर पर योजना अनुसार सफलता मिली । समाधान स्तर पर भी आंषिक सफलता मिली । अब समाज के नेतृत्व मे अन्तिम संधर्श षुरू हो और उसमे उनके निर्देषानुसार मेरी भूमिका बने यह दिषा

KASHINDIA

है । अभी कई सार्थक प्रयत्न हो रहे है। ठाकुर दास जी बंग के मार्गदर्षन मे दुर्गा प्रसाद जी आर्य, खन्ना जी, संतोश द्विवेदी जी, अविनाष काकडे जी, ओम प्रकाष दुबे आदि ने लोक स्वराज्य के लिये संधर्श जारी रखने की धोशणा की है भले ही संधर्श विरोधी लोग कैसा भी व्हिप क्यो न जारी करे । दूसरी ओर रणवीर षर्मा जी भी लोक स्वराज्य के लिये संधर्श के मैदान मे पूरी ताकत से कूद पडे है। रामबहादुर राय जी संविधान की विफलता पर गंभीर विचार मंथन षुरू कर चुके है तो अषोक गाडिया जी राज्य कमजोरी करण अभियान के अन्तर्गत लगातार राज्य को न्याय और सुरक्षा तक ही सीमित रहने की सलाह दे रहे है। सभी अभियान अलग अलग नामों से होते हुए भी एक दूसरे के पूरक ही है । ऐसे और भी नये संगठन बनना संभव है। यह एक षुभ लक्षण है। किन्तु पचीस दिसम्बर के बाद अब मेरी भूमिका पूरी तरह बदल गई है । अब मेरा ऐसे किसी भी संगठन या आंदोलन से किसी तरह का संगठन संबंधी संबंध नही है । सभी संगठन पूरी तरह स्वतंत्र है और मै भी पूरी तरह स्वतंत्र हूॅ क्योकि मैने अपनी परतंत्रता ट्रस्ट को अन्तिम रूप से समर्पित कर दी है और मै किसी और संगठन को बाहर से सहायता या सलाह वहीं तक दे सकता हूॅ जब तक टस्ट को आपत्ति न हो । इस तरह मै लोक स्वराज्य का पूरी तरह समर्थक सहयोगी होने के बाद भी उसके किसी संगठन से दूर हूॅ या बंधा नही हूॅ। मै अपना पूरा समय और षक्ति समाज सषक्तिकरण अभियान अर्थात मानसिक व्यायाम की दिषा मे लगाउगा। ऐसे संधर्श को क्षति पहुॅचाने वालो के विरूद्ध मै खुलकर अपने विचार रखुॅगा भले ही वह विचार हमारे ही किसी संगठन को क्षति पहुॅचाता हो। मै जानता हूॅ कि सर्वोदय से जुडे कुछ अधिकार प्राप्त गांधीवादियो ने गांधी जी के सेवाग्रम आश्रम मे बैठकर लोक स्वराज्य या मनमानी वेतन वृद्धि के विरूद्ध चर्चा करने या योजना बनाने पर रोक लगा दी है और इसीलिये सेवाग्राम जाकर भी मैने इस परिसर में जाना ठीक नही समझा । यह सर्वोदय का आंतरिक मामला है जिस पर चर्चा करना बंग जी, दुर्गाप्रसाद जी को बुरा लग सकता है किन्तु पचीस दिसम्बर के बाद मै स्वतंत्र हूॅ। पचीस दिसम्बर से चार माह पूर्व ही बंग जी ने सितम्बर के पहले सप्ताह मे सेवाग्राम आश्रम बुलाकर आदेष दिया था कि मै सर्वोदय के विशय मे बिना पढाये कुछ न लिखुॅ। मैने उसके पूर्व के अंक मे जो कुछ लिखा था वह मेरी नजर मे ठीक था किन्तु मैने सर्वसेवा संध अध्यक्ष को भविश्य मे न लिखने तथा लिखे गये लेख के लिये लिखित क्षमा याचना की थी । सच लिखने के लिये क्षमा याचना मेरे स्वभाव के प्रतिकूल रहा है किन्तु अब मै स्वतंत्रता पूर्वक टिप्पणी कर सकता हूॅ विषेश कर उन सबके विरूद्ध जो लोक स्वराज्य के विरूद्ध पडयंत्र करते रहते है । जिस तरह मै स्वतंत्र हूॅ उसी तरह अब राही जी भी स्वतंत्र है। वे लोक स्वराजय के लिये संधर्श को कुचलने के लिये अपने कडे अनुषासन के डंडे का उपयोग करे यह उनका आन्तरिक मामला है, मेरा नही। क्योकि जब मै स्वयं ही उस अनुषासन से बंधा नही हूॅ तो उसकी चिन्ता करने वाला भी मै कौन होता हूॅ ?

मै अपने जीवन के सत्तर वर्शो से पूरी तरह संतुश्ट हूॅ। सारी समस्याओ का एक समाधान लोक स्वराज्य को प्रमाणित करना अत्यन्त ही कठिन कार्य था। उस समय तो और भी कठिन जब गांधी की हत्या होते ही गांधीवादियो ने सत्ता और संगठन दोनो दिषाओ से लोक स्वराज्य के विरूद्ध पडयंत्र षुरू कर दिया हो और जो आज तक जारी हो । मुझे हमारे ट्रस्ट ने विचार मंथन मे सक्रिय और लोकस्वराज्य संधर्श मे समर्थन की छूट दे रखी है । टस्ट के लोग समय समय पर बैठक करके और भी आवष्यक दिषा निर्देष देते ही रहेंगें। मेरी हार्दिक इच्छा है कि यदि आप अपने जीवन मे कुछ भी आगे बढना चाहते हो तो मानसिक व्यायाम की आदत डालिये। यह व्यायाम आपको व्यक्तिगत उन्नति मे बहुत सहायक होगा। ऐसा व्यायाम करने वाले अपने भौतिक जीवन मे आसानी से नही ठगे जायेंगे, कभी निराषा ड्रिप्रेषन या अवसाद की बीमारी के षिकार नही होगे ,या कभी आत्म हत्या नही करगे इतनी तो प्रत्यक्ष उपलब्धि है। अन्य मानसिक विकास तो परोक्ष रूप से होगा ही। यदि आप समाज के लिये कुछ करना चाहते है तो सिर्फ और सिर्फ एक ही काम है लोक स्वराज्य के लिये संधर्श । अन्य जो भी काम आप करते है वह आपको आत्म संतुश्टि तो दे सकता है किन्तु समाज को राहत नही देता। अपनी व्यक्तिगत या पारिवारिक उन्नति के लिये राज्य धर्म या समाज का सहारा लेने वाले आपको गली गली मिल सकते है। ऐसे तत्व धर्म, जाति, राश्ट या अन्य कई आकर्शक नामो से जोडने के लिये आपको खोज रहे है,। कई लोग तो आपको षिश्य बनाने के लिये भी किसी गुरू के एजेन्ट बनकर धूम रहे है। ऐसे तत्वो से बच निकलना आसान काम नही । किन्तु अपनी, परिवार की और समाज की उन्नति के लिये ऐस पेषेवर लोगो से बचना तो होगा ही। अब आप पर निर्भर है कि आप बच निकलने मे कितने सक्षम है।

इस दिषा मे चलने की पहल कराने के कठिन कार्य मे मै निष्चित ही सफल रहा हूॅ। मेरे साथ न किसी महापुरूश का नामजुडा था न पारिवारिक आर्थिक मजबूत पृश्ठभूमि। षत्रुओ का अभाव न पहले था न अब है । फिर भी मै जहॉ तक पहुंच सका उससे मै पूरी तरह संतुश्ट हूॅ । मै भविश्य के लिये भी आपको आष्वासन देता हूॅ कि ट्रस्ट के निर्देषन मे मै मानसिक व्यायाम तथा लोक स्वराज्य के लिये किसी भी सीमा तक आगे जाने के

KASHINDIA

लिये हर समय तैयार हूँ। आषा है कि इस यज्ञ मे आप मेरी सहभागिता के लिये मुझे अवसर देगे और सहयोग के लिये सम्पर्क करेगे।

आर्थिकमंदी और राज्य मुक्त अर्थ व्यवस्था

दुनिया मे वर्तमान समय मे दो प्रकार की अर्थ व्यवस्थाएँ प्रचलित है
1. राज्य संरक्षित 2. राज्य नियंत्रित। राज्य संरक्षित अर्थ व्यवस्था को पूँजीवाद तथा राज्य नियंत्रित को साम्यवाद कहते है । एक समाजवाद नाम से भी अर्थ व्यवस्था बननी षुरू हुई जो साम्यवाद मे ही आंषिक संषोधन करके बनाई गई। आज की चर्चा मे हम उसे साम्यवाद के साथ ही जोड रहे है यद्यपि अनेक आधारो पर उसमे कुछ भिन्नताएँ भी रहती है।

प्राचीन समय मे अर्थ व्यवस्था पूरी तरह राज्य मुक्त हुआ करती थी। राजा लोग राज्य व्यवस्था के लिये एक निष्चित मात्रा मे कर लिया करते थे। षेश अर्थ व्यवस्था पूरी तरह स्वतंत्र होती थी। ऐसी अर्थ व्यवस्था मे कोई विकृति आती थी तो उसका समाधान समाज करता था, राज्य नही। जब दुनिया मे लोकतंत्र आया और जन कल्याण कारी राज्य की अवधारणा बनी तो राज्य ने जन कल्याण के नाम पर अर्थ व्यवस्था पर नियंत्रण करने का अधिकार ले लिया और जब साम्यवाद आया तो उसने अर्थ व्यवस्था की स्वतंत्रता को पूरी तरह समाप्त ही धोशित कर दिया।

साम्यवाद मे अर्थ व्यवस्था और सैनिक षक्ति पूरी तरह राज्य के पास एकाकार हो जाती है इसलिये उसके हवा हवाई विकास की जल्दी पोल नही खुलती और जब ऐसी पोल खुलती है तो उस हवा हवाई विकास का प्रभाव हम गोर्बाचोव काल मे देख भी चुके है जब साम्यवाद का पतन हुआ । पूजीवादी अर्थ व्यवस्था मे ऐसे हवा हवाई विकास की पोल खुलने के बाद भी उसका कोई विकल्प नही दिखने से मजबूरी हो जाती है । ऐसे हवा हवाई विकास की पोल खुलने को ही आर्थिक मंदी कहा जाता है । इस तरह वर्तमान आर्थिक मंदी की परिभाशा है '' सम्पन्नो की क्रय षक्ति के नकली और अभूतपूर्व विकास का एकाएक कम हो जाना। अभी दुनिया के सम्पन्न देषों तथा व्यक्तियो के बीच ऐसी ही आर्थिक मंदी आई हुई है।

समाज मे कुछ लोग ऐसे भी होते ही हैं जो नकली विकास करते है। ऐसे लोग दूसरो से अपनी पूँजी या सम्पत्ति की तुलना मे आवष्यकता से अधिक उधार लेते है और उक्त उधार के बल पर नकली विकास करते जाते है। उनका यह नकली विकास उनकी उधार लेने की क्षमता भी बढाता है और इस तरह नकली विकास और उधार लेने की क्षमता का विकास एक दूसरे के पूरक बन कर तेज प्रगति की राह पर चल पडते है । ऐसे व्यक्ति के तेज विकास का लाभ उसके परिवार, मित्र, स्टाफ तथा संपर्कित संस्थाऔ को भी मिलता रहता है । उनका भी जीवन स्तर तथा क्रय षक्ति दूसरो की अपेक्षा अधिक तेज गति से बढती है ।

ऐसे नकली विकास की कभी न कभी पोल खुलती है । तब वह व्यक्ति संभल नही पाता और धडाम से नीचे गिरता है । उसका सारा नकली ताना बाना बिखर जाता हैं उसकी क्रय षक्ति एकदम कम हो जाती है। उसके मित्र, स्टाफ तथा सम्पर्कित संस्थाओं संगठनो पर भी व्यापक प्रभाव पडता है । ऐसे सब लोगो के परिवारो पर भी आंषिक असर स्वाभाविक है । ऐसे व्यक्ति से दूर रहने वाले कुछ लोग भी ऐसे व्यक्ति से यदा कदा रोजगार पाकर लाभान्वित होते रहते थे , ऐसे असम्बद्ध लोग भी कुछ न कुछ प्रभावित तो होते ही है। चूँकि ऐसा हवा हवाई विकास समाज की कीमत पर कोई व्यक्ति तथा उससे जुडे लोगो तक सीमित होता है अतः ऐसे विकास की पोल खुलने से कुल मिलाकर समाज को हानि नही होती वल्कि लाभ ही होता है।

ऐसा नकली विकास कभी कभी बडी बडी सम्पनियॉ भी करती है और उनकी पोल खुलने का प्रभाव भी उतने ही व्यापक क्षेत्र पर पडता है । कभी कभी बैंक भी ऐसा कर लेते है और उसका भी प्रभाव व्यापक होता है । किन्तु कई बार सरकारे ऐसा हवाई विकास करने लगती है । ये सरकारें अनियंत्रित नोट भी छापने लग जाती है तथा हवाई उधार भी लेने लगती है । हवाई अर्थ व्यवस्था से ही उनका विकास भी सफलता का मापदण्ड बन जाता है ं ऐसी सरकारों की पोल खुलने का ही प्रत्यक्ष परिणाम साम्यवादी देषो मे बीस वर्श पूर्व देखने को मिला था। साम्यवाद के पतन के बाद पूरे विष्व की अर्थ व्यवस्था पूजीवादी राह पर चल पडी। अब पूरी दुनिया के देषो की सरकारे ऐसे हवा हवाई नकली विकास मे षामिल हो गई। सेन्सेक्स धडाधड उछलने लगे। षहरी सम्पन्न वुद्धिजीवी लोगो के आय के साधन भी तेज गति से बढे और जीवन स्तर भी। लाखो रूपये वार्शिक कमाने वाले संस्थान तक भी अपने कर्मचारियो के वेतन भत्तो पर ही आय से अधिक खर्च करने लगे। मुद्रा स्फीति को विकास के साथ जोड दिया गया । उन्नत देष अपना पका माल पिछडे देषो को अधिकाधिक निर्यात करने लगे और ऐसे देषो को खरीदने के लिये अधिक से अधिक ऋण या छूट भी देने लगे।

सम्पन्न देषो का भी हवाई विकास तेज गति से होता रहा और पिछडे देषो का भी। षहरी अमीर वुद्धिजीवी के विकास को गरीब ग्रामीण श्रमजीवी के मामूली विकास के साथ जोडकर औसत विकास धोशित कर दिया गया और चूकि यह हवा हवाई विकास पूरे विष्व के देषो मे हो रहा था इसलिये यही हवाई विकास वास्तविक विकास का मापदण्ड बन गया।

पिछले चार पांच वर्शो मे तो इस हवाई विकास ने सारे रेकार्ड ही तोड दिये । किसी देष का आठ प्रतिषत विकास प्रतिवर्श हो रहा है तो किसी का बारह। होड मच गई और विकास का ढिढोरा पीटा जाने लगा। कुछ लोग तो हवाई जहाज के नीचे पैर ही नही रखते थे। षहरी भूमि भवन के मूल्य अनाप षनाप बढ रहे थे। गरीब ग्रामीण श्रमजीवी समझ ही नही पा रहा था कि ऐसा कौन सा पेड है जिसकी पत्तियॉ इन थोडे से लोगो के लिये नोट के उपयोग मे आ रही है और उस पेड मे पत्तियॉ कभी खत्म न होकर बढती ही जा रही है।

एकाएक ऐसी हवा हवाई आर्थिक उन्नति की पोल खुली। अनेक देषो ने डीजल पेटोल का आयात रोककर सम्हालने की कोषिष की किन्तु पोल ढकी न रह सकी। बैंको की पोल खुलने लगी , सेन्सेक्स गिरने लगा, कम्पनियो का अर्थिक ढांचा लडखडाने लगा। षहरी अमीर वुद्धिजीवियो के विकास के हवाई सपने धराषायी होने लगे तथा ऐसे लोगो के जीवन स्तर मे भी कमी आने का खतरा मंडराने लगा। विकसित देषो के पके माल का पिछडे देषो को निर्यात धटने लगा। विकसित देषो के जीवन स्तर पर भी प्रभाव पडने लगा और रोजगार के अवसर भी धटने लगे। सरकारो ने बहुत हाथ पैर मारे, पैकेज पर पैकेज दिये किन्तु मामला रुका नही।

विकसित देषो की मुख्य समस्या यह है कि यदि पिछडे देषो के लोगों ने निर्मित माल का आयात कम कर दिया तो विकसित देषो मे लोगो पर बहुत बुरा असर पडेगा। उत्पादन कम करना होगा। नौकरियॉ जायंगी। वेतन धटेगे और कुल मिलाकर जीवन स्तर कमजोर होगा। दूसरी और पिछडे देषो के गरीब ग्रमीण श्रमजीवी वर्ग को राहत मिलेगी, उपभोक्ता वस्तुऍ सस्ती होगी, भूमि भवन के मूल्य धटेगें। जो वस्तुऍ इनकी क्रय षक्ति के बाहर थी वे भी धीरे धीरे नजदीक आयेगी। आर्थिक विशमता भी कम होगी और विकास दर का अन्तर भी धट जायगा। चूॅकि भारत विकासषील देष माना जाता है जहॉ की सत्तर प्रतिषत आबादी आज भी बीस रूपया प्रतिदिन से नीचे जीवन यापन करती है, जो पके माल का आयात अधिक करता है और निर्यात कम तथा जिसकी सत्तर प्रतिषत आबादी की औसत विकास दर आज भी एक प्रतिषत के आस पास ही है इसलिये चाहे हमारे देष के नेता तथा अर्थ षास्त्री कितना भी चिल्ला रहे हो पर भारत की आम जनता इस तथा कथित आर्थिक मंदी से खुष है। यदि आम नागरिको के देखते देखते कोई हवाई आधार पर बेषुमार प्रगति कर रहा हो और उसकी पोल खुले तो लोग खुष तो होते ही है।

जिन लोगो ने परंपरागत व्यवसाय छोडकर षेयर मे धन लगाकर रातो रात छलांग लगाने का सपना संजोया था , भारत की धरती को छोडकर अमेरिका से करोडपति बनने का प्रयत्न किया था , उच्च षिक्षा प्राप्त करके अति उच्च वेतन के आधार पर असंतुलित विकास की योजना बनाई थी, उनके वेतन कम हों , वे भारत लोटें, उनके सपने टूटे तो सत्तर प्रतिषत गरीब ग्रमीण श्रमजीवी उनके लिये कितनी दुखी हो ? क्या उन्होने तेज विकास के समय इनका भी ध्यान रखा था ? आपने यदि खतरा उठाया था तो परेषानी भी तो आपको ही हो सकती है। कही भी यह आर्थिक मंदी भारत की गरीब ग्रमीण श्रमजीवी जनता के लिये अभिषाप नही है । यदि इन पिछडे लोगो को परेषानी का झूठा भय दिखाया जा रहा है तो ऐसा भय दिखाने वाले अनर्थ षास्त्रियो से यह भी पूछना चाहिये कि आपकी चौदह प्रतिषत विकास दर के समय भी तो हमारी विकास दर एक से उपर नही बढी। अब यदि आपकी विकास दर चौदह से धटकर चार हो जावे तो हमे क्या फर्क पडने वाला है ।

आर्थिक मंदी से सर्वाधिक चिन्तिन तो विकसित पूॅतीवादी देष ही है क्योकि उन्ही का निर्यात प्रभावित हो सकता है किन्तु भारत मे इस मंदी से समाज को भयभीत करने का ठेका वामपंथी समाजवादी वुद्धिजीवियो ने उठा रखा है। ये सबसे ज्यादा चिल्ला रहे है । इन्हे लगता है कि आर्थिक मंदी को पूॅजीवादी अर्थ व्यवस्था की विफलता प्रमाणित करने से साम्यवादी समाजवादी अर्थ व्यवस्था की आवष्यकता प्रमाणित करने मे मदद मिलेगी। मेरे विचार मे भारत अब उस जाल मे फंसेगा नही । बडी मुष्किल से राज्य नियंत्रित अर्थ व्यवस्था से मुक्ति मिली है । अब राज्य संरक्षित अर्थ व्यवस्था से भी मुक्त होकर राज्य मुक्त अर्थ व्यवस्था की चर्चा हो तो अच्छा होगा। मै जानता हूॅ कि न ओबामा ऐसा चाहेगे न मनमोहन सिंह। ये दोनो तथा ऐसे सभी राजनीतिक नेता चाहेंगे कि आर्थिक मंदी का भूत पूरी दुनिया मे भय बन जाये और राज्य आर्थिक सुविधाऍ देकर इस कथित भय के भूत से मुक्ति दिला दे तो अर्थ व्यवस्था पर राज्य का हस्तक्षेप कायम रखने मे सहायता मिलेगी।

KASHI INDIA

आम तौर पर लोग कहते है कि गांधी मर गये, गांधी की हत्या हो गई और हत्यारे को फांसी पर चढा कर उसका काम तमाम कर दिया गया। किन्तु तीन मार्च की जिस धटना का विवरण हमारे ज्ञान तत्व प्रतिनिधि ने दिया वह तो उक्त तीनो ही बातो के विरूद्ध प्रमाण रूप मे है।

देष जानता है कि गांधी की पीढी के जीवित गांधी रूप मे ठाकुर दास जी बंग आज भी हमारे बीच उपलब्ध है। उन्होने आज तक कभी भी वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था को स्वीकार नही किया। सन पचहत्तर के जय प्रकाष आंदोलन के रूप मे जब विकल्प समर्थक और विकल्प विरोधियो के बीच सर्वोदय मे टकराव हुआ तो उन्होने खुलकर विकल्प समर्थको का साथ दिया। भले ही उन सबके प्रयत्नो का कोई परिणाम नही निकला और व्यस्वथा परिवर्तन सत्ता परिवर्तन तक सीमित हो गया। उन्होने अपनी हार स्वीकार की और सन चौरान्नवे के आस पास सिद्धराज जी के साथमिलकर फिर से वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था के विरूद्ध ताना बाना बुना । योजना प्रकाष मे आते ही व्यवस्था का लाभ उठा रहे लोगो ने योजना का गला धोट दिया । पुनः कटक अधिवेषन मे बंग जी ने अपने लोगो के समक्ष व्यवस्था परिवर्तन की बात रखनी चाही किन्तु उन्हे इस योजना के विरूद्ध धोखा दिया गया और वे मन मसोस कर रह गये । यद्यपि उनकी षारीरिक षक्ति धीरे धीरे कमजोर हो रही थी और उम्र भी नब्बे को पार कर चुकी थी किन्तु उनके अन्दर का संधर्श षील गांधी आज भी जवान था। उन्होने फिर हिम्मत बटोरी और बीस इक्कीस बाइस सितम्बर को अकेले ही आगे बढने की धोशणा कर दी। वर्तमान व्यवस्था के समर्थक गांधीवादी मित्रो को आषा थी कि ठाकुर दास बंग अब बीते दिनो की बात बन चुके है किन्तु बंग जी ने सारी आषाओ पर तुशारापात कर दिया।

मेरे और बंग जी के बीच पिछले पंद्रह वर्शो से एक निश्कर्श पर हमेषा ही विरोध रहा। बंग जी का मानना था कि सर्वोदय से जुडे कुछ लोग मेरे विरूद्ध तो है किन्तु लोक स्वराज्य आंदोलन के विरोधी नही। ज्योही उन्हे मुझपर विष्वास हो जायगा त्योही वे पूरी तरह आन्दोलन का साथ देने लग जायेगे । मेरा कथन इसके ठीक विपरीत था। मै कहता था कि मेरा नाम सिर्फ बहाना मात्र है। वास्तव मे वर्तमान राजनैतिक प्रणाली से सुविधा प्राप्त कर रहे लोग इस प्रणाली को किसी भी रूप मे कमजोर नही होने देगे। वे किसी न किसी बहाने लोक स्वराज्य प्रणाली के विरूद्ध तिकडम करते रहेगें। यदि मै लोक स्वराज्य को छोडकर कोई और आंदोलन मे लग जाउॅ तो ये सब मेरे साथ हो जावेंगे। किन्तु बंग जी मेरी बात से सहमत नही होते थे। सितम्बर आठ तक तो मै प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष इस आंदोलन से जुडा था और आंदोलन विरोधियो के पास मेरे विरोध का एक बहाना था किन्तु पच्चीस दिसम्बर को मैने ऐसे किसी भी आंदोलन से स्वय को मुक्त कर लिया। तब इस गुट को आर पार प्रत्यक्ष होना आवष्यक हो गया । अब लोक स्वराज्य अभियान , आंदोलन या मंच मे मेरी किसी भी रूप मे सहयोगी के अतिरिक्त कोई भूमिका नही थी। तब दो मार्च को इस टीम को सामने आकर आंदोलन का विरोध करना मजबूरी हो गई । बैठक मे जिस तरह चिल्ला चिल्ला कर आंदोलन के विरूद्ध कहा जा रहा था उससे कही ऐसा नही लगता था कि इस बैठक मे कोई गांधीवादी सोच भी है।

आंदोलन विरोधियों के इस व्यवहार से बंग जी भी स्तब्ध थे। कोई कुछ बोल नही पा रहा था। एक साथी ने क्षमा मांगकर पिड छुडाया किन्तु फिर भी आकमण कमजोर नही हुआ। आक्रमण तभी ठडा हुआ जब व्हिप जारी हुआ कि गांधी आश्रम से किसी भी प्रकार की लोक स्वराज्य आंदोलन की गतिविधि संचालन वर्जित होगा तथा कोई भी सर्व सेवा संध का जिम्मेदार अधिकारी ऐसी गतिविधि मे किसी भी रूप मे सक्रिय सहयोग नही कर सकेगा । ऐसा प्रस्ताव पारित हुआ तब बंग जी सहित सब लोगो को लगा होगा कि लोक स्वराज्य का विरोध पिछले दस वर्शो से सुविधा भोगी लोगो का एक सुनियोजित पडयंत्र था जिसे समझने मे वे नाकाम रहे।

पूरी बैठक मे आंदोलन विरोधियो की दहाड और बंग जी की चुप्पी यह समझने के लिये पर्याप्त थी कि अब बंग जी ने भी हथियार डाल दिये है। बैठक के बाद हमारे ज्ञानतत्व प्रतिनिधि ने कुछ लोगो के विचार लिये। जो साथी सबसे अधिक चिल्ला रहे थे उन्होने बाहर निकलते ही विजयी अंदाज मे बखान किया कि कैसे उन्होने खरी खोटी सुनाई और आंदोलन समर्थक सिर झुका कर सुनते रहे। एक दूसरे साथी ने बताया कि ये लोकस्वराज्य आंदोलन समर्थक आज की परिस्थितियॉ समझ नही रहे। भाजपा सत्ता मे आने के लिये हाथ पांव पटक रही है । हम यदि निरपेक्ष हो जावें तो उन्हे लाभ ही लाभ होगा। बनारस की सम्पूर्ण सम्पति की सुरक्षा पर भी खतरा संभव है क्योकि हम सम्पूर्ण राजनैतिक व्यवस्था का ही विरोध करेगे तो हमारा सत्ता मे कौन साथ देगा। एक साथी ने बताया कि सत्ता से टकराना कोई हंसी खेल नही है । संकट काल मे सभी नेता एक जुट हो जाते है और हम कार्यकर्ता जीवन भर भोगते रहते है। सन सतहत्तर की सत्ता आने के बाद भी हम पर कुदाल आयोग का झुठा मुकदमा आज तक चल रहा है।

KASHINDIA

आंदोलन समर्थक एक साथी से अन्दर का हाल जानना चाहा तो वे फफक फफक कर रो पडे और इतना ही कहा कि मै कुछ भी कहने की स्थिति मे नही हूँ। किन्तु हमारे प्रतिनिधि ने जब ठाकुर दास जी बंग से अन्दर की धटना के सम्बन्ध मे पूछा तो उन्होने कहा कि वह हमारी परिवारिक बैठक थी जिसका बाहर से कोई सम्बन्ध नही। उनकी बात से स्पश्ट हुआ कि वे अब आंदोलन से हट जायेगें। किन्तु जब उनसे स्पश्ट पूछा गया कि अब लोक स्वराज्य आंदोलन का क्या होगा तो उनके कथन मे एक अजीब चमक और हिम्मत दिखाई दी। उन्होने स्पश्ट किया कि ठाकुरदास बंग ने न कभी किसी व्यक्ति के लिये कोई आंदोलन किया है न सत्ता के लिये और न ही सुख सुविधा के लिये। मैने अपना पूरा जीवन लोक स्वराज्य के लिये ही लगाया है। सौभाग्य से हमारे गांधीवादी मित्र हमारे इस कार्य मे सहज सहयोगी है। यदि कोई सत्ता सुख भोगी हमारे कार्य का विरोध भी करे तो हम या तो उसे समझा सकते है या ईष्वर से निवेदन कर सकते है किन्तु हम उसके दवाव वष अपना काम तो नही छोड सकते। और साफ पूछने पर उन्होने स्पश्ट किया कि लोक स्वराज्य के लिये संधर्श षुरू हो चुका है और बंद होने का कोई प्रष्न ही नही है। यह दायित्व मृत्यु के समय गांधी जी ने हम सब पर छोडा था जो कर्ज रूप मे आज भी हम पर कुछ न कुछ बढा ही है धटा नही । मै तो इससे इन्कार नही कर सकता चाहे अन्य लोग कोई भी निर्णय क्यो न लें।

बंग जी से ऐसे स्पश्ट उत्तर की बिल्कुल भी उम्मीद नही थी । अभी दस मिनट पूर्व ही जो व्यक्ति ऐसे ऐसे हिंसक आरोपों के बाद भी चुप चाप सब झेल रहा था जैसे षेर और हिरण की बैठक चल रही हो उसी आदमी मे इतनी दृढता देखकर हमारे प्रतिनिधि को आभास हुआ कि आज भी गांधी मरा नहीं है । इस सम्पूर्ण समाज को सत्ताधारी तिकडमों से मुक्ति के लिये सब सुखो को तिलांजति देने वाले लोग भी हमारे सामने मौजूद है और सत्ता सुख के लिये ऐसे संधर्श की हत्या करने वाले भी अभी मरे नही है इतिहास बताता है कि गांधी की हत्या करने वाले ने भी गांधी को प्रणाम करने के बाद ही गोली मारी थी तो आज भी लोकस्वराज्य की पीठ मे छुरा धोपने वाले थोडी देर बाद ही बंग जी को झुककर प्रमाम कर रहे हो तो कोई इतिहास विरूद्ध बात नही।

मेरा अपना व्यक्तिगत अनुभव है कि मृत महापुरूशो के नाम पर दुकान चलाने वाले उनके अधूरे कार्य को आगे बढाने मे सबसे बडे वाधक होते है । ऐसा गांधी के साथ कोई पहली बार नही हो रहा । महापुरूश की पूजा करना और उसके कार्यो मे बाधा पहुचाना उनका आम सोच होता है। गांधी का नाम जपना और लोक स्वराज्य के विरोध से चौकने की जरूरत नही। ये लोग बडे मायावी होते है। इन्हे पहचानना भी आसान नही होता। किन्तु निराष होने का भी कोई कारण नही है। ऐसे मायावी लोगो का माया जाल तोडने वाले लोग भी इसी समाज मे मौजूद है जो आपको समाज मे हर जगह दिख सकते है । आवष्यकता सिर्फ इतनी सी है कि आप अपनी समझ मजबूत रखिये। यदि आप एक बात गांठ बांध लेगे कि चाहे कुछ भी हो जावे मै व्यक्ति के पीछे नही चलूगा, विचारो के पीछे चलूंगा और कार्य मे सहयोग करूंगा तो आपको कभी धोखा नही होगा। मैने अपने जीवन मे न कभी गांधी का अनुषरण किया न बंग जी का न किसी और का। मैने अनुषरण किया सत्य और अहिंसा का । मैने सकियता दिखाई लोक स्वराज्य मे और परिणाम सामने है कि मुझे धोखा नही दिया जा सका। मेरी तो नई परिस्थितियो मे आपको यही सलाह है कि आप लगातार विचारो के साथ जुडिये व्यक्तियो के साथ नही। इससे आपको कभी धोखा होने का खतरा नही रहेगा।

बहुत से लोगो ने अपने राजनैतिक उदेष्यो की पूर्ति के लिये अपने नाम के साथ गांधी षब्द जोडने का फैषन बना लिया है तो कुछ लोग गांधी के चष्मे और धोती की नकल को ही गांधी समझते है। कुछ लोग नमक सत्याग्रह की रस्म अदायगी गांधीवाद समझते है तो कुछ लोग देष भर मे फैली गांधी के नाम पर भूमि भवन की अकूत सम्पत्ति। कुछ तो ऐसे भी लोग है जो स्वदेषी तक ही सीमित हो जाते है । स्पश्ट है कि यह सब गांधीवाद नही है । यह सब तो गांधीवाद का भौतिक षरीर है जिसकी आत्मा है लोक स्वराज्य अर्थात परिवार गांव जिले को अपने आन्तरिक मामलो मे निर्णय की स्वतंत्रता । यदि यह स्वतंत्रता नही है तो बाकी सब बिना आत्मा का मृत गांधीवाद है । अब सामने आकर कुछ लोगो ने दोनो का फर्क स्पश्ट कर दिया है । अब संधर्श वाली टीम को समझना होगा कि सत्ता का तामझाम या गांधी के नाम पर बने भवन आश्रम संधर्श के काम नही आने वाले है गांधी का संधर्श तो फिर से नये सिरे की लंगोटी से ही षुरू करना होगा। काम कठिन है किन्तु ध्येय पवित्र है। सफलता मिलेगी इतना विष्वास रखें।

कार्यालयीन प्रष्नो के उत्तर

प्रष्न – आप कहते है कि लालू प्रसाद जी की वुद्धि व्यवसाय प्रधान है । वे लाभ हानि पर अधिक जोर देते है और सुविधा पर कम । किन्तु अभी तो लालू जी ने यात्रियो की असुविधा की चिन्ता करते हुए रेलवे का आर्थिक नुकसान

KASHINDIA

सह लिया। प्रत्येक डब्बे मे किनारे मे दो की जगह तीन सीट करके आमदनी बढाने की योजना बनी थी जिसका आम यात्रियों ने विरोध किया तो लालू जी ने योजना वापस ले ली। अब आपको लालू जी के विशय मे अपनी सोच बदल लेनी चाहिये।

उत्तर – आप लालू जी को नही जानते । मै निकट से परिचित हूँ। मैने जैसा कहा था, लालू जी पूरी तरह वैसे ही है । उन्होने समझा था कि दो को तीन सीट कर देने से किनारे के उपर सोने वाले यात्री की थोडी सी सुविधा कम हो जायेगी किन्तु हर डब्बे मे दस यात्रियो की सीटे बढ सकती है । उन्होने सीटे बढाने का आदेष दे दिया। जब सीट बढी और ट्रेनो का दो तीन महिनो का हिसाब देखा गया तो पाया गया कि रेलवे को आर्थिक रूप से लाभ न होकर नुकसान हो गया। क्योकि आर ए सी की सीट खत्म होकर बीच की सीट मे बदल गई जिससे डब्बे मे यात्री तो उतने ही रहे जितने आर ए सी मिलाकर पहले थे। यात्री तो बढे नही। उल्टे नई सीट लगाने का खर्चा बढ गया और लालू जी को धन्यवाद न देकर उन्हे गालियॉ मिलने लगी।

सच्चाई यह है कि पहले यात्री अधिक होने पर बगल वाली निचली सीट पर एक अतिरिक्त यात्री को बैठने की टिकट दी जाती थी। नई व्यवस्था मे उस बैठने वाले आर ए सी यात्री को बीच मे सोने की सुविधा हो गई। यदि आर ए सी यात्री नही है तो उस सीट से कोईबाधा नही है । वह सीट तो तभी खुलती है जब अतिरिक्त यात्री को टिकट हो । काई यात्री बैठकर ही जाना चाहे तो दोनो रात भर बैठे रहे और बीच की सीट न खोले। मेरे विचार मे तो बीच की अतिरिक्त सीट यात्रियो के लिये तो सुविधा जनक ही थी भले ही रेल विभाग को लाभ नही था। कुछ अखबार वालो ने तो यहॉ तक लिखा कि लालू जी यात्री संख्या बढा रहे है किन्तु लेट्रिन तो चार ही है । जबकि न यात्री बढे न सुविधाऍ धटी। जो जैसा था वही रहा । सिर्फ बीच वाले को बैठने की जगह सोने का विकल्प मिल गया। जब लालू जी को दिखा कि ट्रेन की आय नही बढ रही तो उन्होने अपना आदेष वापस कर लिया। अब फिर से पुरानी तरह आर ए सी चलेगा मेरे विचार मे आपकी जानकारी गलत है, न मै गलत हूँ न लालू प्रसाद।

प्रष्न – श्री रवीन्द्र सिंह पत्रकार संवाद सरोवर गुना मध्यप्रदेष

ऐसा लगता है कि सिंगला जी एक पक्षीय हिंसा समर्थक हो गये है तभी तो गांधी के हत्यारे की चर्चा न करके गांधी की ही चर्चा करते रहते है। हिंसा स्वाभाविक भी होती है और प्रायोजित भी। स्वाभाविक हिंसा को कोई एक हिसक व्यक्ति बढा भी सकता है और कोई साहसी व्यक्ति रोक भी सकता है । किन्तु प्रायोजित हिंसा को रोक पाना कठिन कार्य है।

भारत मे यदि रहना है तो वन्दे मातरम गाना होगा जैसे हिंसक नारे या राज ठाकरे का मराठी मानुश का प्रचार स्वाभाविक हिंसा न होकर प्रायोजित हिंसा कहा जाना चाहिये। यदि ऐसे किसी आयोजन से हिंसा का विस्तार होता है तो आयोजको को भी दडित करना चाहिये।

उत्तर – सिंगला जी के विचारों पर टिप्पणी न करने का निष्चय हुआ है । आपके विचार यथावत् उन तक जा रहे है। वे चाहेगे तो टिप्पणी करेगें या वे ज्ञानतत्व को लिखेगें तब देखा जायगा।

प्रष्न – श्री नरेन्द्र दीक्षित 148 संचार नगर एक्सटेंषन, इन्दौर मध्यप्रदेष

ज्ञानतत्व का 167 वॉ अंक पढा। अभी तक के ज्ञानतत्व के अंको मे आपकी बाते बोरियत की जनक होती रही क्योकि आपे के निश्कर्शो मे मुझे प्रौढ बुद्धि के लक्षण कम ही मिलते थे। पहली बार ज्ञानतत्व के इस अंक मे आपने कुछ सारगर्भित कहा है जिसके लिए मै आपका हृदय से अभिनंदन करता हूँ। डैविड बोम ने क्पंसवहनम की ताकत को पहचाना था और उनके विचार इस संदर्भ मे पठनीय है। क्पंसवहनम विचार मंथन के ग्रुप अधिकाधिक बनने चाहिए। यहॉ विसर्जन आश्रम मे हर बुधवार क्पंसवहनम चलता है।

उत्तर – मैने जीवन के पचास वर्शो तक संवाद के माध्यम से ही कुछ निश्कर्श निकाले है । स्वाभाविक है कि उनमे और संषोधन की जरूरत हो। आप इन्दौर मे है और मै अम्बिकापुर मे। ऐसी स्थिति मे मिलकर संवाद तो कभी कभी ही संभव है । आप यदि किन्ही विशयों पर कुछ लिख सके तो इस संवाद से मेरे चिन्तन मे और परिश्कार संभव है।

दिल्ली जाने के कारण तीन वर्शो तक मानसिक व्यायाम बन्द होना मेरे लिये हानिप्रद ही रहा । पचीस दिसम्बर के बाद संवाद की दिषा मे सक्रियता है। इन्दौर मे ऐसा होता है यह जानकर खुषी हुई । यदि वहॉचलने वाले संवाद का तरीका आप लिख सके तो बहुत अच्छा रहेगा।

KASHINDA